CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. संस्कृति और सभ्यता - ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। भोजन की सामग्री हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है। [10 अंक]

1(i). संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – [1 अंक]

(A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है

(B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है

(C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है

(D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है

सही उत्तर: (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता के साधन बाहरी और दृश्य होते हैं, जबकि संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति तथा रुचि से संबंधित है।
- अपठित गद्यांश में विकल्प का चयन लेखक के दिए अंतर और उदाहरणों के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानें लेखक सभ्यता को बाहरी और संस्कृति को भीतरी उन्नति का गुण कहता है। मोटर और मकान भौतिक वस्तुएँ हैं, किंतु उन्हें बनाने की कला और रुचि मनुष्य के भीतर के गुण हैं। अतः संस्कृति का स्वरूप अपेक्षाकृत सूक्ष्म है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें विकल्प (A) संस्कृति को स्थूल कहकर गद्यांश के अंतर को उलट देता है। (C) में सभ्यता को सूक्ष्म कहा गया है, जो सही नहीं है। (D) का आदर्श और यथार्थ वाला भेद यहाँ लेखक ने स्थापित नहीं किया है। इसलिए गद्यांश से सीधे समर्थित विकल्प (B) है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मोटर और मकान को बाहरी साधन तथा कला और रुचि को भीतरी गुण मानकर विकल्प पहचानें।

1(ii). गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? [1 अंक]

(A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता

(B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा

(C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

(D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

सही उत्तर: (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता का संबंध मनुष्य की बाहरी या भौतिक उन्नति से है।
- शब्द का अभिप्राय निकालते समय गद्यांश की परिभाषा और उसके उदाहरणों को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: परिभाषा और उदाहरण जोड़ें गद्यांश के अनुसार सभ्यता वह गुण है जिससे मनुष्य बाहरी उन्नति करता है। खेती, पका भोजन, घर, कपड़े, सड़कें और यातायात के साधन इस उन्नति के उदाहरण हैं। ये सब जीवन की भौतिक दशा सुधारते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (A) में कलाकार बनने की बात संस्कृति की कला संबंधी योग्यता के निकट है। (B) में स्वाधीन चिंतन का वर्णन गद्यांश में नहीं है। (C) सभ्यता को केवल ऐश्वर्य की कहानी तक सीमित करता है, जबकि यहाँ विकास का पूरा क्रम दिया गया है। (D) में भौतिक विकास का क्रम उसी व्यापक अर्थ को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता का अभिप्राय मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: बाहरी उन्नति के बाद दिए खेती, मकान और यातायात के उदाहरणों से सभ्यता का अर्थ तय करें।

1(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यान से पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है।

कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन गलत है, कारण सही है।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

सही उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचकर उनके व्याख्यात्मक संबंध का निर्णय करना चाहिए।
- संस्कृति मानवीय संवेदनाओं और कलात्मक योग्यता के विकास से जुड़ी है।

चरण 1: कथन जाँचें गद्यांश स्पष्ट कहता है कि संस्कृति से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण जाँचें भीतरी उन्नति में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्य और कला संबंधी योग्यता का विकास शामिल है। कारण में इन्हीं को मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास कहा गया है। इसलिए कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध समझें मानवीय मूल्यों के विकसित होने से दया और परोपकार बढ़ते हैं तथा कलात्मक योग्यता के विकसित होने से कला का रसास्वादन संभव होता है। अतः कारण कथन को समझाता है। (A), (B) और (D) में किसी सही बात को गलत बताया

गया है, इसलिए वे स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दोनों बातें सही मिलने पर यह भी देखें कि कारण से कथन में बताए गुण कैसे उत्पन्न होते हैं।

1(iv). 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता बाहरी सुविधाओं की उपलब्धि है और संस्कृति भीतरी गुणों, रुचि तथा कला का विकास है।
- अंतर स्पष्ट करने के लिए गद्यांश में दिया वस्तु और कला का उदाहरण उपयोगी है।

चरण 1: मूल अंतर स्पष्ट करें सभ्यता से मनुष्य की बाहरी उन्नति होती है और उसे जीवन की भौतिक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। संस्कृति से उसकी भीतरी उन्नति होती है; उसमें दया, ममता, परोपकार और कलात्मक रुचि विकसित होती है।

चरण 2: गद्यांश का उदाहरण दें मोटर और मकान सभ्यता के उदाहरण हैं, जबकि मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि संस्कृति के उदाहरण हैं। इसी प्रकार भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है, जबकि भोजन बनाने और खाने की कला संस्कृति है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता बाहरी साधनों का विकास है, जबकि संस्कृति भीतरी गुणों और कला का विकास है; मकान सभ्यता और उसे बनाने की रुचि संस्कृति का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल परिभाषा न दें; मकान और उसे बनाने की रुचि जैसा एक स्पष्ट युग्म अवश्य जोड़ें।

1(v). 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता साधन जुटाती है और संस्कृति उन साधनों को बनाने तथा उपयोग करने की कला को विकसित करती है।
- साथ-साथ चलने का अर्थ दोनों की समानता नहीं, बल्कि जीवन में उनकी परस्पर संबद्ध भूमिका है।

चरण 1: दोनों का संबंध समझें सभ्यता और संस्कृति के अर्थ अलग हैं, फिर भी मनुष्य के जीवन में वे एक-दूसरे से जुड़ी रहती हैं। सभ्यता के विकास से भोजन, मकान और यातायात जैसी सुविधाएँ मिलती हैं। संस्कृति मनुष्य की रुचि, संवेदना और कला विकसित करती है। भौतिक साधन और उनके निर्माण तथा उपयोग की कला एक ही जीवन के दो संबंधित पक्ष हैं।

चरण 2: भोजन का उदाहरण समझाएँ गद्यांश के अनुसार भोजन की सामग्री सभ्यता के जरिये पैदा होती है। परंतु उस सामग्री से भोजन तैयार करने का ढंग और उसे खाने की कला संस्कृति कहलाती है। इस उदाहरण में सामग्री की उपलब्धता और उसका कलात्मक उपयोग साथ दिखाई देते हैं। मकान तथा उसे बनाने की रुचि भी यही संबंध स्पष्ट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता आवश्यक साधन देती है और संस्कृति उनके निर्माण तथा उपयोग की कला विकसित करती है। भोजन की सामग्री सभ्यता तथा भोजन बनाने और खाने की कला संस्कृति है; इसीलिए दोनों साथ-साथ चलते हैं।

त्वरित सुझाव: साथ-साथ चलने को सिद्ध करने के लिए भोजन की सामग्री और उसे तैयार करने की कला को एक ही उदाहरण में जोड़ें।

1(vi). "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ आत्मा का गुण कहने का आशय मनुष्य की आंतरिक संवेदना और संस्कारों से है।
- गद्यांश में संस्कृति की पहचान दया, ममता, परोपकार और कला से आनंद लेने की योग्यता से की गई है।

चरण 1: कथन का आशय खोलें संस्कृति को आत्मा का गुण कहने का अर्थ है कि उसका संबंध केवल शरीर की सुविधा या बाहरी सजावट से नहीं है। वह मनुष्य के भीतर विकसित होने वाली संवेदनशीलता, उदारता और रुचि है। अच्छे कपड़े, अच्छा भोजन या बड़ा मकान बाहरी उन्नति के संकेत हो सकते हैं, लेकिन उनसे अकेले मनुष्य के भीतरी गुण सिद्ध नहीं होते।

चरण 2: गद्यांश से पुष्टि करें लेखक संस्कृति को भीतरी उन्नति करने वाला गुण कहता है। इसी से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत, कविता, चित्र और मूर्ति का आनंद लेने योग्य बनता है। ये सभी मन और संवेदना के गुण हैं। मोटर के स्थान पर उसे बनाने की कला तथा मकान के स्थान पर उसे बनाने की रुचि पर बल देना भी इसी आंतरिक पक्ष को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति, मानवीय संवेदनाओं और कलात्मक रुचि का गुण है। इसलिए उसे शरीर की बाहरी सुविधा के बजाय आत्मा का गुण कहा गया है।

त्वरित सुझाव: आत्मा का अर्थ यहाँ आंतरिक गुण समझें और दया, परोपकार तथा कला की रुचि से कथन की पुष्टि करें।

1(vii). सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में सभ्यता का विकास आदिम जीवन से व्यवस्थित और सुविधासंपन्न जीवन की ओर बढ़ने के रूप में बताया गया है।
- दो भागों वाले प्रश्न में पहले पूर्व स्थिति और फिर विकास के परिणाम अलग-अलग बताने चाहिए।

चरण 1: विकास से पहले की स्थिति बताएँ मनुष्य को घर बनाना नहीं आता था। वह पेड़ों की छाया या पहाड़ों की खोह में रहता था। खेती का ज्ञान न होने से कंद-मूल खाकर गुजारा करता था। कपड़ा बुनना भी नहीं जानता था, इसलिए निर्वस्त्र रहता था अथवा पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल पहनता था। गद्यांश इसे असभ्यता की अवस्था कहता है।

चरण 2: विकास के परिणाम बताएँ सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य खेती करके अनाज पैदा करने लगा और उसे आग पर पकाकर खाने लगा। वह घर बनाने तथा कपड़े बुनकर पहनने लगा। आगे चलकर रेलगाड़ी, मोटर, हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े मकान विकसित हुए। अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक उपलब्ध हुई। इस प्रकार उसकी बाहरी जीवन-स्थितियों और भौतिक सुविधाओं में उन्नति हुई।

चरण 3: निष्कर्ष पहले मनुष्य प्राकृतिक आश्रयों में रहता, कंद-मूल खाता और छाल या खाल पहनता था। सभ्यता के विकास से खेती, पका भोजन, घर, कपड़े और आगे अनेक यातायात तथा आवास संबंधी सुविधाएँ मिलीं।

त्वरित सुझाव: पूर्व स्थिति के लिए निवास, भोजन और वस्त्र लिखें; फिर इन्हीं तीनों में आए बदलाव बताकर उत्तर पूरा करें।

2. धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को। [8 अंक]

2(i). काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? [1 अंक]

(A) चाँदी की साड़ी के रूप में
(B) फूली सरसों के रूप में
(C) मैके में आई बेटी के रूप में
(D) हमजोली सखी के रूप में

सही उत्तर: (C) मैके में आई बेटी के रूप में

हल:

अवधारणा:

- उपमा के माध्यम से धूप की प्रसन्नता को बेटी की सहज खुशी से जोड़ना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: धूप के रूप को पहचानें कवि कहता है, 'मैके में आई बेटी की तरह मगन है'। इससे स्पष्ट है कि धूप का मानवीय रूप मायके आई हुई प्रसन्न बेटी का है। बेटी की तरह धूप भी परिचित वातावरण में उल्लास और अपनापन अनुभव करती दिखाई गई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें चाँदी की साड़ी धूप के चमकीले रूप का परिधान है, स्वयं धूप का मानवीय रूप नहीं। फूली सरसों वह है जिससे धूप लिपटती है। हमजोली सखियों का उल्लेख दोनों के मिलन को समझाने के लिए है; धूप के सीधे चित्रण का उत्तर बेटी है।

चरण 3: निष्कर्ष धूप को मैके में आई हुई मगन बेटी के रूप में चित्रित किया गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: उपमा में की तरह से पहले आए व्यक्ति और उसके भाव को साथ पढ़कर विकल्प चुनें।

2(ii). फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? [1 अंक]

(A) धूप

(B) हवा

(C) बेटी

(D) चाँदनी

सही उत्तर: (A) धूप

हल:

अवधारणा:

- लगातार आती पंक्तियों में क्रिया करने वाले मूल पात्र को पहचानना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: पिछली पंक्तियों से संबंध जोड़ें काव्यांश का आरंभ धूप के उल्लेख से होता है। अगली पंक्तियों में उसी धूप को मगन बेटी कहा गया है और फिर लिखा है, 'फूली सरसों से आके लिपट गई है'। अतः लिपटने की क्रिया का कर्ता धूप ही है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर स्पष्ट करें हवा और चाँदनी का इस मिलन के संदर्भ में उल्लेख नहीं है। बेटी धूप को समझाने के लिए प्रयुक्त उपमा है, कोई अलग वास्तविक पात्र नहीं। इसलिए बेटी को कर्ता मानना उपमेय और उपमान में भ्रम करना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष फूली हुई सरसों से धूप आकर लिपट गई है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: लगातार पंक्तियों में छिपे कर्ता को खोजते समय पहले वाक्य के मुख्य पात्र पर लौटें।

2(iii). खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – [1 अंक]

(A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की

(B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

(C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की

(D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की

सही उत्तर: (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

हल:

अवधारणा:

- श्रव्य बिंब में प्राकृतिक ध्वनि और संगीत के बीच स्थापित संबंध समझना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: ध्वनि का स्रोत खोजें 'सारंगी बजती है खेतों की गोदी में' के तुरंत बाद कवि कहता है, 'दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के'। इन पंक्तियों को साथ पढ़ने पर सारंगी का मधुर संगीत उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों का बिंब बनता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें यहाँ हवा की ध्वनि का उल्लेख नहीं है। किसान की बाँसुरी या बच्चों द्वारा पक्षियों को बुलाने की बात भी काव्यांश में नहीं कही गई है। ये विवरण बाहर से जोड़ना अनुचित होगा। पक्षियों के मधुर स्वर ही पंक्तियों में सीधे उपस्थित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की सारंगी बजती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: श्रव्य बिंब का अर्थ तय करने के लिए उसके ठीक आगे आई ध्वनि संबंधी पंक्ति अवश्य पढ़ें।

2(iv). ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलना का उत्तर देते समय उपमान के साथ तुलना का स्पष्ट आधार बताना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: उपमान पहचानें कवि ने लिखा है, 'काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा'। यहाँ काल की तुलना काग अर्थात कौए से की गई है। निर्जीव काल को बैठकर देखने वाले प्राणी के रूप में कल्पित किया गया है।

चरण 2: तुलना का आधार समझें दोनों की समानता ठूँठ पर गुमसुम, शांत और निष्क्रिय बैठने के दृश्य में है। 'सोई आँखों' से दिवावसान देखने का उल्लेख इस शिथिल और मौन दशा को और स्पष्ट करता है। उत्तर का आधार उनका रंग नहीं, बल्कि यह बैठने और देखने की मुद्रा है।

चरण 3: निष्कर्ष काल की तुलना ठूँठ पर गुमसुम बैठे कौए से की गई है। तुलना का आधार उसकी शांत, निष्क्रिय मुद्रा और उनींदी आँखों से दिन का अवसान देखना है।

त्वरित सुझाव: किससे के लिए उपमान और किस आधार पर के लिए समान मुद्रा या गुण अलग पहचानें।

2(v). नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के दृश्य में कवि की कल्पना और उपमा का आधार स्पष्ट करना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: नदी और आकाश का दृश्य समझें नदी के निर्मल जल में ऊपर का स्वच्छ आकाश प्रतिबिंबित हो रहा है। इस दृश्य को कवि ने साधारण प्रतिबिंब कहकर छोड़ नहीं दिया है। उसकी कल्पना में आकाश स्वयं पृथ्वी के ऊपर खड़ा होकर नीचे नदी की ओर झुका हुआ जान पड़ता है। जल में उसका दिखाई देना पानी पीने की मुद्रा का आभास देता है।

चरण 2: नंदी की उपमा का आशय बताएँ कवि के शब्द हैं, 'शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में / निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है'। अर्थात निर्मल आकाश मानो शिव का नंदी हो, जो नदी में पानी पीने में इतना मग्न है कि सुध-बुध खोकर खड़ा है। नंदी का नदी की ओर झुककर पानी पीना और जल में आकाश का प्रतिबिंब दिखाई देना इस कल्पना का दृश्य आधार है। इससे शांत ग्रामीण प्रकृति एक सजीव, आत्मीय रूप ग्रहण करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने नदी में पड़े आकाश के प्रतिबिंब को देखकर कल्पना की है कि निर्मल आकाश शिव के नंदी की तरह नदी में पानी पी रहा है और उसमें मग्न होकर पृथ्वी के ऊपर बेसुध खड़ा है।

त्वरित सुझाव: दृश्य के वास्तविक आधार, कवि की कल्पना और प्रयुक्त उपमान को क्रम से समझाकर उत्तर लिखें।

2(vi). काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में रंग, प्रकाश, ध्वनि, सुगंध और शांत दृश्य के सहारे प्रकृति का वर्णन करना।
- उत्तर का प्रमाण दिए गए काव्यांश की पंक्तियों और उनके पारस्परिक संबंध से लेना।

चरण 1: जीवंत और उल्लासपूर्ण दृश्य बताएँ ग्रामीण प्रकृति में चाँदी की साड़ी जैसी चमकती धूप और फूली हुई सरसों का मिलन दो सखियों के आलिंगन जैसा आत्मीय है। खेतों के ऊपर समूहों में उड़ते पक्षियों की मधुर ध्वनि सारंगी के संगीत जैसी सुनाई देती है। रंग-बिरंगी पंखुड़ियाँ और फूलों की सुगंध चारों दिशाओं को महकाती हैं। ये दृश्य मनुष्य के मन को उज्ज्वल आनंद और दिव्य दीप्ति से भर देते हैं।

चरण 2: शांत सौंदर्य को भी शामिल करें निर्मल आकाश नदी के जल में प्रतिबिंबित होकर शिव के नंदी जैसा पानी पीता प्रतीत होता है। ठूँठ पर कौए के समान गुमसुम बैठा काल उनींदी आँखों से दिन का अवसान देखता हुआ कल्पित है। इस प्रकार गाँव की प्रकृति में केवल चहल-पहल नहीं, शांति और ठहराव भी है। कवि ने धूप, खेत, पक्षी, फूल, नदी और आकाश को आत्मीय संबंधों तथा सजीव कल्पनाओं से जोड़कर उसका बहुरंगी सौंदर्य उभारा है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में ग्रामीण प्रकृति उजली धूप, फूली सरसों, पक्षियों के मधुर स्वर, सुगंधित फूलों और नदी में झलकते निर्मल आकाश से सुंदर बनती है। उसका उल्लास और शांत सौंदर्य मानव-मन को आनंदित करते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-वर्णन में केवल वस्तुओं के नाम न गिनाएँ; उनके रंग, स्वर, सुगंध और मन पर प्रभाव जोड़ें।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जंक फूड का बढ़ता चलन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, स्पष्ट विचार और प्रभावी भाषा आवश्यक हैं। आरंभ पाठक का ध्यान खींचे और अंत कोई सार्थक संदेश दे।
- जंक फूड का बढ़ता चलन लिखते समय सुविधा, विज्ञापन और स्वाद के आकर्षण को स्वास्थ्य तथा खानपान की आदतों से जोड़ना चाहिए। भाषा सरल और विचारों का क्रम स्वाभाविक रखें।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना लेख को एक उपयुक्त शीर्षक दें। पहले रोजमर्रा का दृश्य रखकर जंक फूड की लोकप्रियता दिखाएँ। फिर उसकी ओर खिंचने के कारण और नियमित सेवन की समस्याएँ बताएँ। अंत में घर के संतुलित भोजन तथा समझदार चुनाव का संदेश दें। लगभग 120 शब्दों में इन पक्षों को जोड़ते समय अनावश्यक आँकड़ों और विषय से बाहर की चर्चा से बचें। तथ्यात्मक चर्चा के साथ डिब्बे के उदास पड़े रहने जैसी कल्पना लेख को रचनात्मक बनाती है। संदेश उपदेशात्मक विस्तार के बजाय संक्षेप में दें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का पता, संबोधन या समापन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: पूरा आदर्श लेख **जंक फूड का बढ़ता चलन**

विद्यालय की छुट्टी होते ही ठेले पर भीड़ लग जाती है। किसी के हाथ में बर्गर है, किसी के पास चिप्स। घर का भोजन डिब्बे में उदास पड़ा रहता है। स्वाद, आकर्षक विज्ञापन और जल्दी मिलने की सुविधा ने जंक फूड को हमारी दिनचर्या में जगह दे दी है। मित्रों के साथ इसे खाना फैशन भी बन गया है। लेकिन हर स्वाद सेहत का साथी नहीं होता। अधिक नमक, चीनी और तेल वाला भोजन लगातार खाने से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। हमें स्वाद और पोषण में संतुलन बनाना होगा। घर का ताजा भोजन, फल और पौष्टिक नाश्ता भी स्वादिष्ट हो सकते हैं। कभी स्वाद बदलना बुरा नहीं, पर आदत बनाना ठीक नहीं। आखिर स्वस्थ शरीर ही हमारी असली पूँजी है।

चरण 3: निष्कर्ष लेख जंक फूड के आकर्षण को दैनिक जीवन के दृश्य से उभारता है और संतुलित खानपान का स्पष्ट संदेश देता है। शीर्षक, कारण, प्रभाव और समाधान के क्रम में विषय पूरा होता है।

त्वरित सुझाव: आरंभ में एक छोटा दृश्य, बीच में कारण और प्रभाव तथा अंत में व्यावहारिक सुझाव रखकर लगभग 120 शब्दों का लेख प्रभावी बनाएँ।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

महानगरों का बढ़ता आकर्षण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय की अनुभूति को रोचक आरंभ, क्रमबद्ध विचार और सार्थक अंत के साथ व्यक्त किया जाता है। शीर्षक सीधे विषय का संकेत देता है।
- महानगरों का आकर्षण शिक्षा, रोजगार, सुविधाओं और बेहतर जीवन की आकांक्षा से जुड़ा है। इस आकर्षण के साथ भीड़, खर्च और अकेलेपन जैसे अनुभवों पर भी संतुलित दृष्टि रखनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के बाद किसी युवक के सपने या शहर के दृश्य से लेख आरंभ करें। आगे शिक्षा, रोजगार और चिकित्सा जैसी सुविधाओं के कारण महानगरों की ओर बढ़ते आकर्षण को स्पष्ट करें। फिर जीवन की व्यावहारिक कठिनाइयों का संकेत दें और अंत में छोटे नगरों के विकास का सुझाव रखें। लगभग 120 शब्दों के लेख में हर पक्ष को संक्षेप में जोड़ें। बिना प्रमाण कोई आँकड़ा न लिखें। चित्रात्मक भाषा विचार को रोचक बनाए, किंतु विषय के मुख्य प्रश्न से ध्यान न हटाए। लेख में संबोधन या हस्ताक्षर की जरूरत नहीं है।

चरण 2: पूरा आदर्श लेख **महानगरों का बढ़ता आकर्षण**

गाँव की छत पर खड़ा युवक दूर चमकती रोशनियों में अपना भविष्य देखता है। उसे लगता है कि महानगर पहुँचते ही सपनों को पंख मिल जाएँगे। अच्छे शिक्षण संस्थान, रोजगार के अवसर, बेहतर अस्पताल और आधुनिक सुविधाएँ उसे बुलाती हैं। सिनेमा तथा सामाजिक माध्यम भी शहर की चमक बढ़ाते हैं। पर इस चमक के पीछे लंबी यात्राएँ, महँगे मकान, प्रदूषण और अकेलापन भी छिपे हैं। भीड़ में रहते हुए भी आदमी कभी अपनेपन को तरस जाता है। महानगर अवसर देते हैं, पर सफलता के लिए कौशल और मेहनत जरूरी हैं। छोटे नगरों और गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार का विकास हो तो विवश पलायन घटेगा। सपनों की उड़ान सुंदर है, लेकिन उसकी जड़ें अपनी मिट्टी में भी मजबूत होनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेख महानगरों की सुविधाओं और अवसरों का आकर्षण दिखाते हुए वहाँ की कठिनाइयों को भी सामने रखता है। स्थानीय विकास का सुझाव और मिट्टी से जुड़ाव का संदेश इसे संतुलित अंत देते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल शहर की सुविधाएँ गिनाने के बजाय आकर्षण, वास्तविक कठिनाइयों और छोटे नगरों के विकास को एक क्रम में जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

बाज़ारों का बदलता स्वरूप [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का अनुभवपूर्ण चित्रण, विचारों का क्रम और अपनी दृष्टि महत्त्वपूर्ण होते हैं। केवल वस्तुओं की सूची बनाने के स्थान पर बाज़ार के बदलने का सामाजिक प्रभाव दिखाना चाहिए।
- विषय की सीमा बाज़ार का बदलता स्वरूप है। पुराने साप्ताहिक बाज़ार, आधुनिक मॉल और ऑनलाइन खरीदारी के बीच संबंध स्थापित करके लगभग 120 शब्दों का स्वतंत्र लेख लिखा जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण निर्धारित करना सबसे पहले विषय के अनुरूप शीर्षक दें। आरंभ में पुराने बाज़ार का छोटा, सजीव चित्र प्रस्तुत करें। फिर मॉल और मोबाइल से होने वाली खरीदारी की ओर बढ़ें। अंतिम भाग में सुविधा के साथ स्थानीय दुकानदारों और मानवीय संबंधों की चिंता जोड़ें। रचनात्मक लेख के लिए पत्र जैसा पता, संबोधन या हस्ताक्षर आवश्यक नहीं है।

चरण 2: विषयवस्तु का क्रम बनाना लेख में परिवर्तन की दिशा स्पष्ट रहे : परिचित दुकानदारों और बातचीत वाले बाज़ार से आकर्षक मॉल तथा घर तक सामान पहुँचाने वाली डिजिटल दुकानों तक। लाभों में समय की बचत, अधिक विकल्प और कीमत की तुलना रखें। सीमाओं में अनावश्यक खरीदारी तथा छोटे दुकानदारों पर दबाव दिखाएँ। भाषा सरल और चित्रात्मक रहे; निष्कर्ष परिवर्तन का विरोध

करने के बजाय विवेकपूर्ण खरीदारी का संदेश दे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **बाज़ारों का बदलता स्वरूप**

कभी बाज़ार जाना एक उत्सव होता था। गलियों में सजी दुकानें, दुकानदार की आत्मीय पुकार और मोलभाव की आवाज़ें खरीदारी को जीवंत बनाती थीं। आज उन्हीं बाज़ारों के साथ चमचमाते मॉल और मोबाइल की छोटी स्क्रीन पर खुलती दुकानें खड़ी हैं। घर बैठे सामान मँगाना सुविधाजनक है; कीमतों की तुलना और अनेक विकल्प भी आसानी से मिल जाते हैं। लेकिन आकर्षक छूट कई बार आवश्यकता से अधिक खरीदने को उकसाती है। छोटे दुकानदार भी इस नई प्रतिस्पर्धा से जूझ रहे हैं। सुविधा की दौड़ में परिचय और अपनापन कहीं पीछे छूट रहे हैं। बदलते बाज़ारों को अपनाते समय हमें समझदारी से खरीदना होगा। तकनीक का लाभ लें, पर स्थानीय दुकानों का साथ भी दें। आखिर बाज़ार केवल सामान का नहीं, संबंधों का संसार भी है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख पुराने बाज़ार की आत्मीयता और आधुनिक खरीदारी की सुविधा को जोड़ते हुए संतुलित उपभोक्ता दृष्टि प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक सजीव आरंभ, परिवर्तन के दो पक्ष और एक स्पष्ट अंतिम विचार अवश्य रखें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'रेडियो मूलतः एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है।' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है। श्रोता तक सूचना ध्वनि के रूप में पहुँचती है और प्रसारण का क्रम उसके सुनने का क्रम निर्धारित करता है।
- एकरेखीयता का आशय सूचना का समय में लगातार आगे बढ़ना है। अखबार की तरह पीछे लौटकर कोई पंक्ति पढ़ने की सुविधा सामान्य रेडियो प्रसारण में नहीं होती।

चरण 1: एकरेखीयता का कारण समझना रेडियो का संदेश एक निश्चित क्रम में प्रसारित होता है। जो बात पहले कही गई, वह गुजर चुकी होती है और उसके बाद अगली बात सुनाई देती है। श्रोता मनचाहे अंश पर सीधे नहीं पहुँच सकता। यहाँ मूल विशेषता ध्वनि का लगातार आगे बढ़ना है, केवल दृश्य का अभाव नहीं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो में सूचना एक निश्चित क्रम में ध्वनि के रूप में आगे बढ़ती है। श्रोता बीत चुके प्रसारण को अखबार की तरह पलटकर नहीं सुन सकता। उसे प्रसारण के साथ ही अर्थ ग्रहण करना पड़ता है; इसलिए रेडियो एकरेखीय माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रसारण का निश्चित, आगे बढ़ता समयक्रम तथा पीछे लौटकर सुन पाने की सामान्य सुविधा का अभाव रेडियो को एकरेखीय बनाता है।

त्वरित सुझाव: एकरेखीयता समझाते समय अखबार को पलटकर पढ़ने और रेडियो को प्रसारण के साथ सुनने का अंतर लिखें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

एंकर-बाइट से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न समाचार में एंकर दर्शकों को खबर का परिचय देता है और उसके संदर्भ तथा मुख्य तथ्य सामने रखता है।
- बाइट किसी संबंधित व्यक्ति के रिकॉर्ड किए गए कथन का चुना हुआ संक्षिप्त अंश है। वह समाचार को प्रत्यक्ष कथन का आधार देता है।

चरण 1: दोनों घटकों का संबंध समझना एंकर-बाइट समाचार प्रस्तुति का वह रूप है जिसमें एंकर द्वारा खबर बताए जाने के साथ संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ कथन सुनाया या दिखाया जाता है। यह व्यक्ति प्रत्यक्षदर्शी, अधिकारी अथवा विषय का जानकार हो सकता है। बाइट एंकर की अपनी टिप्पणी या पूरे कार्यक्रम का नाम नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर एंकर-बाइट टेलीविज़न समाचार प्रस्तुति का एक प्रकार है। इसमें एंकर पहले खबर की जानकारी देता है, फिर उससे संबंधित व्यक्ति के रिकॉर्ड किए गए कथन का संक्षिप्त अंश दिखाया-सुनाया जाता है। यह कथन खबर को प्रामाणिकता और संबंधित व्यक्ति का पक्ष देता है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर की समाचार प्रस्तुति के साथ संबंधित व्यक्ति की रिकॉर्ड की गई संक्षिप्त बाइट का संयोजन एंकर-बाइट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में एंकर की भूमिका और संबंधित व्यक्ति की रिकॉर्ड की गई बाइट, दोनों को स्पष्ट रूप से जोड़ें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी विशिष्ट क्षेत्र से जुड़ा होता है; उसमें उस क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली और तथ्यों की शुद्धता आवश्यक होती है।
- भाषा की विशिष्टता का उद्देश्य पाठक को विषय समझाना है; अनावश्यक कठिन शब्दों से उसे उलझाना नहीं।

चरण 1: भाषा का अंतर समझें सामान्य लेखन में रोज़मर्रा की प्रचलित भाषा पर्याप्त हो सकती है। विशेष लेखन में विज्ञान, अर्थव्यवस्था, खेल अथवा कानून जैसे क्षेत्र की सही संज्ञाएँ और पारिभाषिक शब्द आवश्यक होते हैं। लेखक विषय को समझकर तकनीकी शब्दों का सरल अर्थ भी बताता है।

चरण 2: शैली का अंतर स्पष्ट करें विशेष लेखन की शैली तथ्यपरक, सटीक और विषयानुकूल होती है। सामान्य लेखन की शैली विषय और उद्देश्य के अनुसार अधिक विविध हो सकती है। विशेष लेखन में विशेषज्ञ जानकारी को आम पाठक की समझ से जोड़ना महत्त्वपूर्ण है। केवल कठिन भाषा का प्रयोग इसकी पहचान नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन में विषयानुकूल पारिभाषिक शब्दावली, तथ्यपरकता और सटीकता होती है। तकनीकी शब्दों को सामान्य पाठक के लिए सरल ढंग से समझाया जाता है। सामान्य लेखन में प्रचलित शब्दावली और अपेक्षाकृत सामान्य अभिव्यक्ति का प्रयोग होता है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पारिभाषिक शब्दावली और सरल व्याख्या दोनों का उल्लेख करें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
समाचार और फीचर में क्या अंतर है ? उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का केंद्र किसी ताज़ी घटना की तथ्यात्मक सूचना है; फीचर का केंद्र विषय का रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है।
- दोनों में तथ्य सही होने चाहिए, लेकिन उनकी रचना-पद्धति और प्रस्तुति में अंतर होता है।

चरण 1: समाचार की विशेषता बताएँ समाचार पाठक को किसी ताज़ी घटना के बारे में संक्षिप्त और स्पष्ट जानकारी देता है। इसमें प्रमुख तथ्य पहले रखे जाते हैं; प्रायः उलटा पिरामिड शैली अपनाई जाती है। लेखक की निजी भावनाओं की अपेक्षा घटना की तथ्यात्मक सूचना को प्रधानता मिलती है।

चरण 2: फीचर से तुलना करें फीचर किसी घटना, व्यक्ति या विषय के मानवीय पहलुओं को रोचक ढंग से खोलता है। उसमें वर्णन, प्रसंग और सृजनात्मक प्रस्तुति की गुंजाइश रहती है। उसका किसी ताज़ी घटना से जुड़ा होना अनिवार्य नहीं है। वह समाचार की तरह उलटा पिरामिड शैली में बँधा भी नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार ताज़ी घटना की संक्षिप्त, तथ्यात्मक सूचना है, जो प्रायः उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है। फीचर किसी विषय का रोचक, वर्णनात्मक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है। उसका तात्कालिक घटना से जुड़ना अनिवार्य नहीं; उसकी शैली अधिक सृजनात्मक होती है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते हुए तात्कालिकता, प्रस्तुति और मानवीय पक्ष को तुलना का आधार बनाएँ।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तथ्यों के साथ उनके कारणों, संबंधों और प्रभावों की पड़ताल करती है।
- विश्वसनीय प्रमाणों पर आधारित निष्कर्ष और निजी अनुमान में अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 1: साधारण विवरण से आगे बढ़ें केवल यह बता देना कि कोई घटना कब और कहाँ हुई, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट के लिए पर्याप्त नहीं है। इसमें घटना या समस्या की पृष्ठभूमि समझाई जाती है और उपलब्ध तथ्यों को परस्पर जोड़कर उनके कारणों तथा परिणामों की जाँच की जाती है।

चरण 2: विश्लेषण का आधार स्पष्ट करें रिपोर्टर आँकड़ों, दस्तावेज़ों और संबंधित पक्षों के कथनों जैसे विश्वसनीय स्रोतों की सहायता लेता है। वह इनके आधार पर स्थिति का अर्थ स्पष्ट करता है और प्रमाणसमर्थित निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। इस प्रकार पाठक को घटना की सूचना के साथ उसकी गहरी समझ भी प्राप्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष जिस रिपोर्ट में घटना या समस्या के तथ्यों के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और परिणामों की पड़ताल की जाती है, उसे विश्लेषणात्मक रिपोर्ट कहते हैं। इसमें विश्वसनीय आँकड़ों और प्रमाणों के आधार पर तथ्यों की व्याख्या तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में तथ्य, कारण-परिणाम की पड़ताल और प्रमाण आधारित निष्कर्ष अवश्य जोड़ें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
'अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय वह है जिसके लिए लेखक ने पहले से सामग्री या तैयार उत्तर नहीं रटा हो। उस पर लिखते समय स्वतंत्र चिंतन और अनुभव का सहारा लेना पड़ता है।
- लेखन पर पकड़ का अर्थ विचारों को चुनकर उन्हें क्रमबद्ध, स्पष्ट और प्रभावी भाषा में व्यक्त करने की क्षमता है।

चरण 1: कथन का आशय और उत्तर की योजना उत्तर में यह संबंध स्पष्ट करना है कि बिना पूर्व तैयारी के किसी नए विषय पर सोचना लेखक की क्षमता कैसे विकसित करता है। विषय से जुड़े अनुभव चुनना, विचारों का क्रम बनाना और उपयुक्त शब्द खोजना इसके प्रमुख पक्ष हैं। यह लेखन के अभ्यास की उपयोगिता समझाने वाला प्रश्न है। उदाहरण के लिए, साधारण वस्तु या किसी नए अनुभव पर लिखते समय लेखक को उसके उपयोग, उससे जुड़ी स्मृतियों और अपने विचारों में से प्रासंगिक बातें चुननी पड़ती हैं। इस चयन के बाद आरंभ,

मध्य और अंत का क्रम बनाना विचारों को बिखरने से बचाता है। अभ्यास का यही क्रम लेखक को तैयार वाक्यों की जगह अपनी भाषा गढ़ना सिखाता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक तैयार सामग्री या रटे हुए विचारों पर निर्भर नहीं रह सकता। उसे अपने अनुभवों, कल्पना और अवलोकन से विषय के नए पक्ष खोजने पड़ते हैं। इससे स्वतंत्र चिंतन, मौलिकता तथा विचारों को क्रमबद्ध करने की क्षमता विकसित होती है। उपयुक्त शब्द चुनने और भावों को स्पष्ट ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास मिलता है। ऐसे निरंतर अभ्यास से झिझक दूर होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है और लेखक विविध विषयों पर सहज, प्रभावी तथा सुसंगत लेखन करने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार नए विषयों पर स्वतंत्र सोच, अनुभव के उपयोग और भाषा के अभ्यास से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नया विषय, स्वतंत्र चिंतन, विचारों का क्रम और भाषा का अभ्यास जोड़कर कथन का कारण स्पष्ट कीजिए।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों के नाट्य रूपांतरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी की वर्णनात्मक सामग्री मंच पर पात्रों के संवाद, अभिनय और क्रियाओं से प्रस्तुत होती है। पात्रों का मूल स्वभाव तथा कथानक में उनकी भूमिका सुरक्षित रहनी चाहिए।
- मंच की सीमाओं के अनुसार पात्रों का चयन और संवादों की रचना की जाती है। दर्शक पात्रों के व्यवहार से उनके संबंध और मनोभाव समझते हैं।

चरण 1: पात्रों के रूपांतरण की योजना पहले मुख्य और सहायक पात्रों को पहचानकर कथानक में उनका योगदान देखना चाहिए। फिर सोचना चाहिए कि कहानी में वर्णन द्वारा बताई गई विशेषता मंच पर कैसे दिखाई जाएगी। वेशभूषा, हावभाव, प्रवेश, संवाद और क्रियाएँ पात्र की पहचान बना सकती हैं। अनावश्यक पात्रों को घटाने पर भी आवश्यक संबंध और घटनाएँ नहीं टूटने चाहिए। पात्र का संवाद उसकी आयु, सामाजिक स्थिति और मानसिक अवस्था से मेल खाए। मन के विचारों को यथासंभव दृश्य क्रिया या स्वाभाविक संवाद का रूप देना चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय उनके मूल स्वभाव, मनोभाव, पारस्परिक संबंध और कथानक में उनकी भूमिका का ध्यान रखना चाहिए। पात्रों की संख्या मंच की आवश्यकता के अनुकूल हो; अनावश्यक पात्र हटाए जा सकते हैं, पर कथा का मूल आशय सुरक्षित रहे। उनकी भाषा और संवाद आयु, परिवेश तथा व्यक्तित्व के अनुरूप, संक्षिप्त और अभिनय योग्य हों। कहानी में वर्णित मानसिक दशाओं को संवाद, हावभाव और क्रियाओं द्वारा व्यक्त करना चाहिए। वेशभूषा तथा व्यवहार से भी पात्र का चरित्र स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रों की मूल पहचान और कथा की संगति बनाए रखते हुए उन्हें मंच पर विश्वसनीय तथा अभिनय योग्य बनाना नाट्य रूपांतरण का आधार है।

त्वरित सुझाव: पात्रों का स्वभाव, संबंध, मंचानुकूल संख्या, संवाद और अभिनय याद रखकर उत्तर में हर पक्ष का संक्षिप्त कारण दीजिए।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन करते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; इसमें दृश्य, पात्र और घटनाएँ संवाद तथा ध्वनि के सहारे श्रोता तक पहुँचते हैं।
- कहानी में नाटकीय संघर्ष, स्पष्ट घटनाक्रम और ध्वनि के रूप में प्रस्तुत की जा सकने वाली क्रियाएँ होनी चाहिए।

चरण 1: माध्यम की अपेक्षा समझें रेडियो पर मंच, वेशभूषा या दृश्य दिखाई नहीं देते। इसलिए कहानी चुनते समय देखना चाहिए कि उसका प्रभाव केवल किसी दृश्य को देखने पर तो निर्भर नहीं है। पात्रों की स्थिति, संबंध और मनोभाव स्वाभाविक संवादों से स्पष्ट होने चाहिए। केवल लंबा वर्णन सुनाने पर नाटकीयता घटती है; इसलिए कहानी में पात्रों के बीच क्रिया और प्रतिक्रिया की गुंजाइश आवश्यक है।

चरण 2: कहानी की उपयुक्तता जाँचें सीमित और पहचानने योग्य पात्र, रोचक संघर्ष तथा सुसंगत कथानक श्रोता को कहानी से जोड़े रखते हैं। समय और स्थान में बहुत अधिक परिवर्तन श्रव्य प्रस्तुति को उलझा सकते हैं। ऐसी घटनाएँ उपयोगी हैं जिनके संकेत कदमों, दस्तक, वर्षा आदि की ध्वनियों से मिल सकें।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक के लिए ऐसी कहानी चुननी चाहिए जिसमें नाटकीय संघर्ष, रोचक घटनाक्रम और प्रभावशाली संवादों की संभावना हो। पात्र सीमित हों तथा उनकी आवाज़ और बातचीत से पहचान स्पष्ट हो सके। घटनाएँ केवल दृश्य पर निर्भर न हों; उनका बोध संवाद, ध्वनि और संगीत से कराया जा सके। समय और स्थान के बहुत अधिक बदलाव न हों। कहानी निर्धारित अवधि में विकसित हो सके और उसका आरंभ, उत्कर्ष तथा अंत स्पष्ट हों। इससे श्रोता बिना देखे कथानक समझता और उससे जुड़ा रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक के लिए श्रव्य प्रस्तुति के अनुकूल, संवादप्रधान, रोचक और स्पष्ट कथानक वाली कहानी चुननी चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक चयन-कसौटी को रेडियो की केवल सुनाई देने वाली प्रकृति से जोड़ें।

---

6. भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो। [5 अंक]

6(i). काव्यांश में 'काली सिल' उपमान किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ? [1 अंक]

(A) अंधकार से युक्त प्रकृति
(B) अँधेरे से युक्त आसमान
(C) अंधकार से युक्त पृथ्वी
(D) रात्रि का अंधकार

सही उत्तर: (B) अँधेरे से युक्त आसमान

हल:

अवधारणा:

- उपमान वह परिचित वस्तु है जिससे कवि किसी अन्य वस्तु की तुलना करता है।
- यहाँ आरंभिक पद 'भोर का नभ' आगे आने वाले सभी आकाश-बिंबों का आधार है।

चरण 1: तुलना का विषय पहचानें कवि ने भोर के नभ को पहले राख से लीपे चौके और फिर काली सिल के रूप में देखा है। काली सिल आकाश में शेष अँधेरे का संकेत करती है; उस पर लाल केसर जैसी आभा उभर रही है। इसलिए उपमेय अँधेरे से युक्त आसमान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) की प्रकृति का अर्थ बहुत व्यापक है, जबकि वर्णन विशेष रूप से नभ का है। (C) में पृथ्वी कही गई है, जिसका यह बिंब नहीं है। (D) केवल रात्रि के अंधकार का नाम है; उसमें तुलना के वास्तविक विषय अर्थात आकाश का उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) अँधेरे से युक्त आसमान है।

त्वरित सुझाव: पहली पंक्ति के 'नभ' को याद रखकर आगे दिए गए उपमानों का उपमेय पहचानें।

6(ii). 'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से' – पंक्ति का सही अर्थ है – [1 अंक]

(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

(B) भोर का आकाश काला है।

(C) भोर में केसर को धोया गया है।

(D) भोर में काली सिल को धोया गया है।

सही उत्तर: (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंब का अर्थ संदर्भ और रंगों के परस्पर संबंध से खुलता है।
- काली सिल अँधेरे आकाश का तथा लाल केसर उभरती प्रातःकालीन लालिमा का बिंब है।

चरण 1: दोनों रंगों का संबंध समझें 'बहुत काली सिल' में रात का बचा हुआ अँधेरा दिखाई देता है। 'ज़रा से लाल केसर' में उस अँधेरे के बीच फैलती भोर की हल्की लालिमा का संकेत है। पूरी पंक्ति भोर के लालिमा से युक्त आकाश का शब्दचित्र बनाती है।

चरण 2: भ्रामक अर्थों को हटाएँ (B) में केवल कालापन है और केसर की लालिमा छूट जाती है। (C) में केसर धोने को वास्तविक घटना मान लिया गया है। (D) में सिल धोने का शाब्दिक अर्थ लिया गया है। दोनों ही कवि की तुलना को घरेलू घटना मानते हैं और नभ का संदर्भ खो देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

त्वरित सुझाव: उपमा में घरेलू वस्तु को वास्तविक घटना न मानें; उससे आकाश के रंग का संकेत खोजें।

6(iii). इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है ? [1 अंक]

(A) छायाचित्र

(B) रेखाचित्र

(C) शब्दचित्र

(D) भित्तिचित्र

सही उत्तर: (C) शब्दचित्र

हल:

अवधारणा:

- शब्दचित्र में भाषा के माध्यम से किसी दृश्य का सजीव अनुभव कराया जाता है।
- उपमा और दृश्य-बिंब पाठक की कल्पना में रंग तथा आकृतियाँ उभारते हैं।

चरण 1: चित्रण के साधन को पहचानें कवि ने राख से लीपे चौके, काली सिल, लाल केसर, स्लेट और नील जल जैसे परिचित बिंबों का प्रयोग किया है। इन शब्दों से पाठक के मन में उषाकाल के बदलते रंगों का दृश्य बनता है। यह चित्र भाषा द्वारा प्रस्तुत हुआ है।

चरण 2: अन्य चित्रों से अंतर करें (A) छायाचित्र कैमरे से लिया गया दृश्य होता है। (B) रेखाचित्र रेखाओं से निर्मित होता है। (D) भित्तिचित्र दीवार पर बनाया जाता है। काव्यांश में इन साधनों का उपयोग नहीं हुआ; कवि ने शब्दों से ही भोर को सजीव किया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) शब्दचित्र है।

त्वरित सुझाव: चित्र का विषय देखने के साथ यह भी जाँचें कि उसे बनाने का माध्यम शब्द है या रेखा, कैमरा अथवा दीवार।

6(iv). कवि द्वारा भोर को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ : [1 अंक]

(A) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है।

(B) प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है।

(C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

(D) नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है।

सही उत्तर: (C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

हल:

अवधारणा:

- राख का हल्का धूसर-सफेद रंग और गीले चौके की आभा भोर के नभ की रंगत स्पष्ट करते हैं।
- प्रश्न में विशेष उपमा का अर्थ पूछा गया है, इसलिए उत्तर उसी बिंब की रंग-संगति से चुनना चाहिए।

चरण 1: बिंब की रंग-संगति समझें भोर के नीले आकाश पर हल्की सफेदी फैली है। कवि को उसकी नम, हल्की धूसर उजास राख से लीपे और अभी गीले पड़े चौके जैसी लगती है। दिए गए विकल्पों में सफेद और नीले वर्णों का मिश्रण इस दृश्य का सबसे सटीक अर्थ व्यक्त करता है।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन करें (A) चमत्कृत करने वाली तीखी आभा का संकेत देता है, जबकि बिंब हल्की उजास का है। (B) सुंदरता बढ़ने की सामान्य बात कहता है, रंगों का अर्थ स्पष्ट नहीं करता। (D) परिवर्तन का व्यापक प्रतीकात्मक अर्थ देता है, लेकिन राख और चौके की प्रत्यक्ष रंग-समानता नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

त्वरित सुझाव: 'राख' और 'गीले चौके' के रंग को भोर के नीले नभ से जोड़कर सबसे विशिष्ट विकल्प चुनें।

6(v). 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह' – का वर्णन किस अनुभूति से संबंधित है ? [1 अंक]

(A) निर्मलता और उज्ज्वलता

(B) कृत्रिमता और पवित्रता

(C) कोमलता और सुंदरता

(D) विस्मय और रहस्य

सही उत्तर: (A) निर्मलता और उज्ज्वलता

हल:

अवधारणा:

- नील जल और गौर झिलमिल देह का बिंब प्रातःकालीन आकाश की स्वच्छ, प्रकाशमान छवि उभारता है।
- उत्तर में बिंब के प्रत्यक्ष गुणों और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: बिंब से उत्पन्न अनुभूति पहचानें नीले जल में झिलमिलाती गौर देह की कल्पना आकाश में फैलती स्वच्छ उजास का आभास देती है। 'गौर' उजलेपन को और 'झिलमिल' प्रकाश की चमक को उभारता है। नीले जल की स्वच्छता के साथ यह दृश्य निर्मलता और उज्ज्वलता का अनुभव कराता है।

चरण 2: शेष विकल्पों का परीक्षण करें (B) की कृत्रिमता का काव्यांश में आधार नहीं है। (C) में कोमलता और सुंदरता सामान्य सौंदर्य-भाव हैं, पर यहाँ रंग और प्रकाश के विशिष्ट संकेत अधिक निर्णायक हैं। (D) का विस्मय और रहस्य इस पंक्ति के स्वच्छ तथा उजले रूप को सीधे व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) निर्मलता और उज्ज्वलता है।

त्वरित सुझाव: 'गौर' और 'झिलमिल' को उजास से तथा 'नील जल' को स्वच्छता से जोड़कर विकल्प चुनें।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"सब घर एक कर देना" – पंक्ति का बच्चों और कविता के संदर्भ में क्या औचित्य है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बच्चों का खेल सहज आत्मीयता और भेदभाव से मुक्ति का प्रतीक है।
- कविता कल्पना और संवेदना के बल पर अपने-पराए तथा देश-काल की सीमाएँ पार करती है।

चरण 1: बच्चों के संदर्भ को समझें बच्चे खेलते समय घर, जाति, वर्ग अथवा अपने-पराए का भेद नहीं देखते। खेल की साझा खुशी उन्हें एक-दूसरे के निकट ले आती है। इसीलिए उनके खेल में अलग-अलग घर एक साझा संसार बन जाते हैं। यहाँ घर एक करने का अर्थ भवनों को मिलाना नहीं, मनुष्यों के बीच की दूरियाँ मिटाना है। बच्चों का खेल और कविता, दोनों का आनंद बाँटने से बढ़ता है। अतः पंक्ति में एकता का भाव बाहरी समानता से अधिक हृदय की निकटता पर आधारित है।

चरण 2: कविता से संबंध जोड़ें कविता भी संवेदना के स्तर पर लोगों को जोड़ती है। उसका संसार किसी एक घर, भाषा या समुदाय तक सीमित नहीं रहता। बच्चों की तरह वह संकीर्ण भेदों से मुक्त होकर सबको अपना बनाती है। इस समानता के आधार पर पंक्ति का औचित्य स्पष्ट होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बच्चे खेलते समय अपने-पराए, जाति-वर्ग तथा घरों की सीमाएँ भूलकर सबको अपना बना लेते हैं। इसी प्रकार कविता अपनी व्यापक संवेदना से सभी मनुष्यों को जोड़ती और भेदभाव मिटाती है। दोनों का संसार सहज, स्वतंत्र और सीमा-मुक्त है। इसलिए "सब घर एक कर देना बच्चों की आत्मीयता और कविता की सार्वभौमिक मानवीय एकता को सार्थक रूप से व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति बच्चों और कविता, दोनों की भेदभाव मिटाकर सबको जोड़ने की शक्ति को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बच्चों का सीमा-मुक्त खेल और फिर कविता की व्यापक संवेदना जोड़ें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ? तर्क सहित उत्तर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा माध्यम बनती है और कार्यक्रम संचालक की क्रूरता आलोचना का विषय है।
- करुणा का प्रदर्शन और वास्तविक मानवीय संवेदना अलग-अलग हो सकते हैं।

चरण 1: कविता की स्थिति पहचानें कार्यक्रम बनाने वाले अपाहिज व्यक्ति के अनुभव को सम्मानपूर्वक सुनने के स्थान पर उसे बार-बार पीड़ा जताने और रोने के लिए विवश करते हैं। कैमरे का ध्यान उसकी विवशता और चेहरे के भावों पर रहता है। इस व्यवहार में सहायता अथवा समझ की अपेक्षा दर्शकों के लिए एक प्रभावशाली दृश्य बनाने की चिंता है।

चरण 2: क्रूरता का तर्क स्पष्ट करें यहाँ करुणा मनोरंजन और कार्यक्रम की सफलता का साधन बन जाती है। प्रश्नकर्ता पीड़ित व्यक्ति की गरिमा भूलकर उसकी असहायता का उपयोग करता है। कवि का व्यंग्य इसी अमानवीय दृष्टि पर है; कविता की आलोचनात्मक चेतना पाठक में पीड़ित के प्रति सच्ची संवेदना जगाती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मेरे विचार में यह करुणा के प्रदर्शन में छिपी क्रूरता की कविता है। कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा समझने के बजाय उसे रुलाकर दर्शकों के सामने प्रस्तुत करना चाहता है। उसकी असहायता कार्यक्रम की सफलता का साधन बनती है। कवि इस संवेदनहीन मीडिया-दृष्टि पर व्यंग्य करते हुए दिखाता है कि दिखावटी करुणा पीड़ित की मानवीय गरिमा का शोषण करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता करुणा के नाम पर किए जाने वाले क्रूर, संवेदनहीन प्रदर्शन की आलोचना करती है।

त्वरित सुझाव: क्रूरता का प्रमाण अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा से नहीं, संचालक के व्यवहार से दें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था' – 'कवितावली' के संदर्भ में इस कथन को सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास समाज के विविध वर्गों की आजीविका छिनने का चित्र प्रस्तुत करते हैं।
- पेट की आग और जीविकाहीन लोगों की चिंता तत्कालीन आर्थिक दुर्दशा के प्रमाण हैं।

चरण 1: विभिन्न व्यवसायों का संकट देखें कवितावली में किसान के पास खेती, भिखारी के पास भीख, व्यापारी के पास व्यापार और सेवक के पास चाकरी न होने का वर्णन है। इन उदाहरणों में केवल किसी एक पेशे की समस्या नहीं, समाज के अनेक वर्गों के काम-धंधे का ठप होना दिखाई देता है। इससे व्यापक बेरोज़गारी और जीविका-संकट सिद्ध होते हैं।

चरण 2: भूख और निरुपायता से निष्कर्ष निकालें जीविकाविहीन लोग चिंता में डूबकर एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। पेट की आग मनुष्य को विवश करती है; कवि के वर्णन में भूख की तीव्रता पारिवारिक मूल्यों तक को संकट में डाल देती है। आजीविका का अभाव, भुखमरी और निरुपायता मिलकर उस युग की आर्थिक त्रासदी का साक्ष्य बनते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवितावली में किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को चाकरी

न मिलने का वर्णन है। जीविका से वंचित लोग चिंतित होकर पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। पेट की आग इतनी तीव्र है कि लोग संतान तक बेचने को विवश हैं। ये स्थितियाँ तुलसीदास के युग की व्यापक बेरोज़गारी और भुखमरी सिद्ध करती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष विभिन्न वर्गों का काम छिनना और भूख से उत्पन्न विवशता उस युग की व्यापक बेरोज़गारी के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: किसान, व्यापारी और सेवक के उदाहरणों के साथ जीविका-विहीन लोगों की चिंता अवश्य जोड़ें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पतंग' कविता में कवि ने भादो के समाप्त होने के बाद प्रकृति में आए परिवर्तनों को कैसे अभिव्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भादो के बाद वर्षा का अँधेरा और तेज बौछारें समाप्त होकर शरद का स्वच्छ वातावरण आता है।
- चमकीली सुबह, सुनहरी धूप और निर्मल आकाश प्रकृति के नए रूप को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: ऋतु-परिवर्तन पहचानें कवि भादो के बीतने के साथ वर्षा की तेज बौछारों और अँधेरे के हटने का चित्र बनाता है। अब शरद का उजला, खुला वातावरण उपस्थित है। सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल और चमकीली दिखाई गई है। इस उपमान से सुबह की ताजगी तथा उसका आकर्षक रूप उभरता है। वर्षा के हटने से आकाश पतंगों की उड़ान के लिए खुल जाता है। यह ऋतु-परिवर्तन बच्चों में उत्साह और नई उमंग जगाने वाली पृष्ठभूमि भी तैयार करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भादो के बाद वर्षा की तेज बौछारें और अँधेरा हट जाते हैं। शरद की सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल और चमकीली दिखाई देती है। सुनहरी धूप, निर्मल आकाश और हलकी हवा से प्रकृति ताजा, उजली तथा आकर्षक हो उठती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने वर्षा के अँधेरे के हटने और शरद की चमकीली सुबह तथा सुनहरी धूप से प्रकृति का बदला रूप दिखाया है।

त्वरित सुझाव: भादो के वर्षामय अँधेरे से शरद की उजली सुबह तक का परिवर्तन क्रम में लिखें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता में 'जीवन का पारावार' किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल वर्षा द्वारा जीवन देने वाला तथा शोषित किसान की आशा का प्रतीक है।
- संबोधन का अर्थ कविता के अंतिम अंश में चित्रित किसान की दयनीय दशा से स्पष्ट होता है।

चरण 1: प्रसंग और संबोधन कवि किसान की जीर्ण भुजाओं और शीर्ण शरीर का वर्णन करता है। शोषण ने उसका जीवनरस चूस लिया है और उसका शरीर हड्डियों का ढाँचा रह गया है। ऐसे किसान की पुकार बादल की ओर है। अत: "जीवन के पारावार" का संबोधन बादल के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहाँ पारावार का आशय जीवन के अपार भंडार से है। जल मिलने पर किसान की सूखी खेती फिर हरी हो सकती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर "बादल राग" में बादल को "जीवन का पारावार" कहा गया है। उसकी वर्षा धरती को जल, फसलों को जीवन और शोषित किसान को आशा देती है। वह विप्लव का प्रतीक भी है, जिससे किसान शोषणमुक्त, समृद्ध जीवन की अपेक्षा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल वर्षा और नवजीवन का अपार स्रोत है; इसी कारण उसे "जीवन का पारावार" कहा गया है।

त्वरित सुझाव: संबोधन का अर्थ बताते समय बादल की वर्षा को किसान के जीवन और उसकी आशा से जोड़िए।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में 'भाषा में पेंच कसना' के आशय को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सहज कथ्य और अनावश्यक भाषायी जटिलता के संबंध पर विचार करती है।
- पेंच कसना एक रूपक है: अभिव्यक्ति पर अत्यधिक प्रयास कथ्य को असहज और अस्पष्ट बना सकता है।

चरण 1: रूपक का संदर्भ कविता में बात सहज थी, पर भाषा के चक्कर में उलझ गई। कवि भाषा को प्रभावशाली बनाने की कोशिश में उसे घुमाता-फिराता और कसता जाता है। जैसे अधिक कसने पर पेंच की चूड़ी बिगड़ जाती है, वैसे ही भाषा पर अनावश्यक जोर देने से बात की स्वाभाविकता समाप्त हो जाती है। यह सहज अभिव्यक्ति के महत्व को उभारता है। भाषा तभी सफल है जब कथ्य स्पष्ट रहे।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर "भाषा में पेंच कसना" का आशय सरल बात को प्रभावशाली बनाने के लिए शब्दों और अभिव्यक्ति को अनावश्यक रूप से जटिल करना है। इससे कथ्य की सहजता और स्पष्टता नष्ट हो जाती है तथा बात पाठक तक ठीक से नहीं पहुँचती।

चरण 3: निष्कर्ष इस रूपक में भाषा को कृत्रिम रूप से जटिल बनाने और उससे कथ्य की स्पष्टता खो जाने का संकेत है।

त्वरित सुझाव: पेंच के रूपक को केवल कठिन शब्दों तक सीमित न रखें; बात की सहजता नष्ट होना भी स्पष्ट कीजिए।

---

9. अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है। वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे। [5 अंक]

9(i). अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी ? [1 अंक]

(A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज के कारण

(B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण

(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

(D) रात में व्याप्त अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण

सही उत्तर: (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण के माध्यम से प्रकृति में मनुष्य की पीड़ा का प्रतिबिंब दिखाया गया है।
- उत्तर का आधार गाँव की कराहें, कै और बच्चों की निर्बल पुकार हैं।

चरण 1: पीड़ा का कारण पहचानना झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़ें आती हैं तथा बच्चे निर्बल कंठ से माँ को पुकारते हैं। यह महामारी से पीड़ित गाँव की असहाय दशा है। रात का आँसू बहाना इसी सामूहिक दुख को व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में पशुओं की आवाज़ें केवल भयावह वातावरण का अंग हैं। (B) प्रकृति की विवशता को मुख्य कारण बना देता है, जबकि पीड़ा गाँव वालों की है। (D) रात को अंधकार से भयभीत मानता है; अंश में रात दुख की साझीदार है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है: महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण।

त्वरित सुझाव: रात के मानवीकरण का कारण खोजते समय कराहते गाँव वालों और निर्बल बच्चों के वर्णन को आधार बनाइए।

9(ii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
क. प्रकाश का नाम नहीं	(i) हार न मानना
ख. तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना	(ii) आशा और जिजीविषा का अभाव
ग. चित न होना	(iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना

विकल्प : [1 अंक]

(A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii)

(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

(C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii)

(D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)

सही उत्तर: (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक कथनों का मिलान उनके भावार्थ से करना चाहिए।
- प्रकाश आशा का तथा ज्योति का समाप्त होना सहायता की असफलता का संकेत है।

चरण 1: तीनों मिलान क. "प्रकाश का नाम नहीं" आशा और जिजीविषा के अभाव को व्यक्त करता है, इसलिए क-(ii)। ख. तारे की शक्ति रास्ते में समाप्त होने से वह पृथ्वी के पीड़ितों की सहायता नहीं कर पाता, इसलिए ख-(iii)। ग. "चित न होना" पराजय न स्वीकारने अथवा हार न मानने का भाव देता है, इसलिए ग-(i)।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (A) प्रकाश के अभाव को सहायता न कर पाने से जोड़ता है। (C) तथा (D) प्रकाश के अभाव को हार न मानना बताते हैं; ये अर्थ असंगत हैं। केवल (B) में तीनों कथनों का उपयुक्त भावार्थ दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही मिलान क-(ii), ख-(iii), ग-(i) है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रकाश के अभाव का मिलान आशा के अभाव से करें, फिर बाकी दोनों प्रतीकों की पुष्टि करें।

9(iii). रात्रि के भयावहपन का उल्लेख किस प्रभाव को दर्शाने के लिए किया गया है ? [1 अंक]

(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

(B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु

(C) रात्रि में भी गाँव में हलकी चहल-पहल बताने हेतु

(D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु

सही उत्तर: (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

हल:

अवधारणा:

- वातावरण का चित्रण कथा की केंद्रीय परिस्थिति के प्रभाव को गहरा करता है।
- भयावह सन्नाटा और कराहें महामारी की व्यापक त्रासदी को सामने लाते हैं।

चरण 1: वर्णन का समग्र उद्देश्य अंधकार, कराहें, कै की आवाज़ें, निर्बल बच्चे और पशुओं का रोना मिलकर संकटग्रस्त गाँव का चित्र बनाते हैं। रात्रि का भयावहपन महामारी के कारण छाए दुख, असहायता और मृत्यु के भय को अधिक तीव्र करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में मानवीय पीड़ा का उल्लेख सही है, पर वह समूचे वातावरण के उद्देश्य का आंशिक वर्णन है। (A) उस पीड़ा के व्यापक कारण और दुष्प्रभाव को समेटता है। (C) की चहल-पहल और (D) का उत्साह अंश के सन्नाटे और निर्बल पुकार के विपरीत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है: महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु।

त्वरित सुझाव: वातावरण के उद्देश्य वाले प्रश्न में किसी एक संकेत के बजाय पूरे वर्णन से उभरता केंद्रीय प्रभाव चुनिए।

9(iv). गद्यांश में इनमें से किसका उल्लेख नहीं मिलता है ? [1 अंक]

(A) रात्रि की निस्तब्धता

(B) तारों की भावुकता

(C) उत्तेजना युक्त उत्साह

(D) आहों का हृदय में दबना

सही उत्तर: (C) उत्तेजना युक्त उत्साह

हल:

अवधारणा:

- निषेधात्मक प्रश्न में उस विकल्प को चुनना होता है जिसका उल्लेख पाठ में नहीं है।
- हर विकल्प को गद्यांश के प्रत्यक्ष शब्दों से जाँचना चाहिए।

चरण 1: उल्लिखित बातों की पहचान (A) के लिए रात्रि की निस्तब्धता का बार-बार उल्लेख है। (B) के लिए "भावुक तारा" और उसकी भावुकता पर अन्य तारों का हँसना उपस्थित है। (D) के लिए आहों को हृदय में दबाने की चेष्टा का स्पष्ट वर्णन है।

चरण 2: अनुपस्थित भाव की पहचान अंश में लोग कराह रहे हैं, बच्चे निर्बल कंठ से रोते हैं और कुत्ते मन मारकर पड़े रहते हैं। ये सभी दुख और निराशा के संकेत हैं। कहीं भी उत्तेजना से भरे उत्साह का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए (C) प्रश्न की माँग पूरी करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है: उत्तेजना युक्त उत्साह।

त्वरित सुझाव: "नहीं" शब्द को ध्यान में रखकर पहले तीन प्रत्यक्ष उल्लेख ढूँढ़िए; शेष विकल्प स्वतः स्पष्ट हो जाएगा।

9(v). 'पेचक की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ है – [1 अंक]

(A) जीव-जंतुओं की सक्रियता

(B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

(C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि

(D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता

सही उत्तर: (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकार्थ के प्रश्न में शब्द का भावात्मक संकेत उसके प्रसंग से निर्धारित होता है।
- भयावह रात में पेचक की आवाज़ संकट और अनिष्ट की आशंका को गहराती है।

चरण 1: प्रसंग के साथ अर्थ अंश में कराहें, अंधकार और निर्बल पुकारें गाँव की दुखद परिस्थिति दिखाती हैं। इसी वातावरण में पेचक की आवाज़ को "डरावनी" कहा गया है। वह केवल सुनाई पड़ने वाली ध्वनि नहीं, बल्कि मृत्यु अथवा अनिष्ट की आशंका का भाव जगाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) जीव-जंतुओं की सक्रियता का सामान्य विवरण है। (C) आवाज़ का शाब्दिक अर्थ देता है, प्रतीकार्थ नहीं। (D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता पर जोर देता है, जबकि यहाँ मुख्य प्रभाव भय और संकट है। इसलिए ये तीनों विकल्प अपेक्षित भाव नहीं पकड़ते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: मृत्यु या अनिष्ट की आहट।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ चुनते समय "डरावनी" विशेषण और उसके साथ चित्रित दुखद वातावरण को साथ पढ़िए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंध को किस रूप में महसूस किया ? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा का संस्मरण भक्तिन और उनके बीच के मानवीय संबंध को व्यक्त करता है।
- संबंध की पहचान केवल सेविका और स्वामिनी से नहीं, आपसी आत्मीयता और एक-दूसरे पर प्रभाव से होती है।

चरण 1: संबंध का स्वरूप समझें लेखिका भक्तिन को सामान्य वेतनभोगी सेविका नहीं मानतीं। भक्तिन अपने सेवा-धर्म, अधिकार-भाव और लगाव के कारण उनके जीवन का अभिन्न अंग बन जाती है। इसलिए दोनों को केवल सेविका और स्वामिनी की सीमा में बाँधना उचित नहीं है। उनके बीच औपचारिक व्यवस्था से अधिक आत्मीयता काम करती है। लेखिका के जीवन में भक्तिन का स्थान इतना विशिष्ट है कि वे संबंध को शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पातीं। भक्तिन की सेवा में निजी आग्रह भी है और अपनापन भी। अतः उत्तर में केवल उसकी कार्यकुशलता लिखना पर्याप्त नहीं होगा; संबंध की अनौपचारिकता और भावनात्मक निकटता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 2: पाठ के आधार पर उत्तर लिखें महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपना संबंध सेविका-स्वामिनी के औपचारिक संबंध से बढ़कर अनुभव किया। भक्तिन उनके जीवन में ऐसे घुल-मिल गई कि उसे अलग करके देखना कठिन था। दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती थीं। भक्तिन लेखिका की कविताएँ समझ न पाने पर भी उनका सम्मान करती और उनके साहित्यिक परिचितों से आत्मीय व्यवहार करती थी। यह संबंध स्नेह, विश्वास और अपनत्व का था।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन और महादेवी के संबंध में सेवा के साथ आत्मीयता तथा परस्पर प्रभाव प्रमुख हैं; इसीलिए उसे किसी औपचारिक नाम में सीमित नहीं किया जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सेविका-स्वामिनी से आगे की आत्मीयता स्पष्ट करें और भक्तिन के साहित्यिक सम्मान का प्रसंग जोड़ें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किस प्रकार किया गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकविश्वास में वर्षा के लिए इंदर सेना पर पानी डालना पुण्य और वर्षा के आवाहन का साधन है।
- लेखक का तर्क पानी की कमी में उसके संरक्षण पर आधारित है; जीजी इसे त्याग और दान से जोड़ती हैं।

चरण 1: दोनों दृष्टियों का आधार पहचानें अकाल और जल-संकट के समय इंदर सेना घर-घर पानी माँगती है। लेखक को लगता है कि कठिनाई से जुटाया पानी लड़कों पर डालना व्यर्थ है। दूसरी ओर जीजी की आस्था है कि इंद्र को पानी का अर्घ्य देने से वर्षा मिलेगी। वे पाने से पहले देने और बीज बोने की उपमा से अपना पक्ष समझाती हैं। जीजी के लिए यह केवल पानी बहाने का कर्मकांड नहीं, सामूहिक जीवन में देने की भावना का प्रतीक भी है। लेखक पानी की प्रत्यक्ष हानि देखता है, जबकि जीजी भविष्य में मिलने वाले लाभ और उदारता पर विश्वास करती हैं। उत्तर में उनकी दलील को वैज्ञानिक प्रमाण न बताकर लोकविश्वास के रूप में रखना आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखें पाठ में लेखक का वैज्ञानिक, तर्कशील मन जल-संकट के समय इंदर सेना पर पानी डालने को पानी की बरबादी मानता है। इसके विपरीत जीजी का लोकविश्वास है कि इंद्र को पानी का अर्घ्य देने से वर्षा होती है। वे बीज बोकर फसल पाने की उपमा से दान और त्याग समझाती हैं। लेखक उनकी आस्था का तर्कपूर्ण समाधान नहीं पा पाता; यही द्वंद्व उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोक-आस्था और विवेक का द्वंद्व लेखक की जल-संरक्षण संबंधी आपत्ति तथा जीजी के दान-त्याग संबंधी विश्वास के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: लेखक का जल-बचत वाला तर्क और जीजी का बीज-बोने वाला तर्क आमने-सामने रखकर उत्तर तैयार करें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

श्रम विभाजन किसे कहते हैं ? सभ्य समाज के लिए इसकी क्या आवश्यकता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन का अर्थ समाज के विविध कार्यों को कौशल और योग्यता के अनुसार बाँटना है।
- आंबेडकर श्रम-विभाजन और जन्म पर आधारित श्रमिकों के स्थायी विभाजन में अंतर करते हैं।

चरण 1: परिभाषा और उद्देश्य स्पष्ट करें समाज की सभी आवश्यकताओं को कोई एक व्यक्ति पूरा नहीं कर सकता। इसलिए अलग-अलग लोग अपनी रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण के अनुसार विभिन्न काम करते हैं। इससे कार्यों का विशेषज्ञतापूर्ण निष्पादन संभव होता है। यह व्यवस्था सहयोग पर आधारित होती है, किसी व्यक्ति की जन्मजात ऊँच-नीच पर नहीं। आंबेडकर की आपत्ति काम बाँटने से नहीं, मनुष्यों को ऊँच-नीच में बाँट देने से है। जाति-व्यवस्था मनुष्य की क्षमता और बदलती परिस्थितियों की उपेक्षा करती है। इसलिए आवश्यक श्रम-विभाजन तभी उपयोगी है जब व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त कर सके और आवश्यकता पड़ने पर अपना व्यवसाय बदल सके।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर प्रस्तुत करें समाज के विभिन्न कार्यों को व्यक्तियों की योग्यता, रुचि और दक्षता के अनुसार बाँटना श्रम-विभाजन है। सभ्य समाज में अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति, कार्यकुशलता, विशेषज्ञता और सुचारु व्यवस्था के लिए यह आवश्यक है। इससे लोग परस्पर सहयोग करते हैं और उत्पादन बढ़ता है। किंतु कार्य चुनने की स्वतंत्रता रहनी चाहिए; जन्म के आधार पर पेशा थोपना श्रमिकों का विभाजन है, उचित श्रम-विभाजन नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्य समाज को सहयोग और दक्षता के लिए श्रम-विभाजन चाहिए, किंतु वह योग्यता और स्वतंत्र चयन पर आधारित होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले श्रम-विभाजन की परिभाषा दें, फिर दक्षता और सहयोग बताएँ; अंत में इसे जन्माधारित जाति-विभाजन से अलग करें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का चरित्र संतोष, संयम और आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान का उदाहरण है।
- बाज़ार की सार्थकता जरूरत पूरी करने में है; अनावश्यक लोभ से स्वतंत्र रहना विवेक का परिचायक है।

चरण 1: चरित्र का प्रमाण पहचानें भगत जी चूरन बेचते हैं, पर अधिक कमाई का लोभ उन्हें नहीं बाँधता। नियत कमाई हो जाने पर वे शेष चूरन बच्चों को बाँट देते हैं। यह व्यवहार उनकी उदारता और धन के प्रति अनासक्ति दिखाता है। उनकी सीमित जरूरतें बाजार के आकर्षण पर नियंत्रण रखती हैं। उन्हें धन का अभाव लोभी नहीं बनाता; संतोष उनकी स्वेच्छा से अपनाई जीवन-दृष्टि है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखें भगत जी संतोषी, उदार, संयमी और निर्लोभी व्यक्ति हैं। वे चूरन बेचकर प्रतिदिन छह आने कमाने पर शेष चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। अपनी जरूरतों को पहचानने के कारण वे बाजार के आकर्षण और अधिक धन के मोह से मुक्त रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी संतोष, उदारता और आवश्यकता के अनुसार जीवन जीने की दृष्टि के कारण बाजार के मोह पर विजय पाते हैं।

त्वरित सुझाव: संतोष और उदारता लिखते समय छह आने की कमाई के बाद बच्चों को चूरन बाँटने का प्रमाण अवश्य दें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर लिखिए कि पाठ में शिरीष के फूल की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक शिरीष के माध्यम से ऐसी जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करते हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सहज मस्ती और कोमलता बनाए रखती है।
- तुलना का आधार केवल फूलों का रूप नहीं, बल्कि भीषण गर्मी में भी खिलते रहने का स्वभाव है।

चरण 1: तुलना का आधार समझिए पाठ में शिरीष को कालजयी अवधूत के समान बताया गया है। जेठ की धूप, लू और उमस के बीच भी उसका फूलों से भर जाना बाहरी कठिनाइयों से ऊपर उठने की शक्ति दिखाता है। अवधूत की अनासक्ति की तरह उसकी सरसता परिस्थितियों पर निर्भर नहीं रहती।

चरण 2: पाठ के व्यापक संकेत को जोड़िए लेखक कबीर को भी शिरीष जैसा मस्त, बेपरवा और सरस मानते हैं। इसलिए उत्तर में अवधूत की तुलना के साथ कबीर जैसी फक्कड़ मस्ती का संकेत दिया जा सकता है। केवल फूल का रंग या आकार बताना तुलना का आशय नहीं खोलेगा।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की तुलना कालजयी अवधूत से हुई है। वह भीषण धूप, लू और उमस में भी सरस और प्रसन्न होकर फूलता रहता है। उसका यह निर्लिप्त, मस्त स्वभाव कबीर की फक्कड़ता जैसा है तथा विपरीत परिस्थितियों में जीवन की अजेयता दर्शाता है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय अवधूत का नाम और धूप-लू में भी खिलने का कारण अवश्य जोड़िए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

" 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में 'दासता' को किन व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर स्वतंत्रता को व्यक्ति के अपने जीवन और व्यवसाय का चुनाव करने के अधिकार से जोड़ते हैं।
- कानूनी स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं, यदि सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति को दूसरों द्वारा निर्धारित काम करने पर विवश रखे।

चरण 1: कानूनी अर्थ से आगे बढ़िए दासता का सामान्य अर्थ कानून द्वारा किसी दूसरे के अधीन होना है। आंबेडकर इसका व्यापक अर्थ बताते हैं: जब समाज किसी व्यक्ति के लिए उसका कार्य या पेशा पहले ही निर्धारित कर दे और उसे चुनाव का अवसर न दे, तब भी वह स्वतंत्र नहीं है।

चरण 2: जाति और व्यवसाय का संबंध स्पष्ट कीजिए जाति के आधार पर पेशा थोपने से व्यक्ति अपनी रुचि, क्षमता और इच्छा के अनुरूप कार्य नहीं चुन सकता। उसे दूसरों के तय किए उद्देश्य स्वीकार करने पड़ते हैं। इसलिए कानूनी रूप से स्वतंत्र दिखाई देने वाला व्यक्ति सामाजिक और आर्थिक स्तर पर दासता भोग सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। वह सामाजिक स्थिति भी दासता है जिसमें व्यक्ति दूसरों के निर्धारित उद्देश्य स्वीकार करे। अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न मिलना तथा पैतृक पेशा करने की विवशता भी दासता है।

त्वरित सुझाव: दासता का व्यापक अर्थ समझाते हुए व्यवसाय के स्वतंत्र चुनाव पर सामाजिक प्रतिबंध का उदाहरण दीजिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी वर्तमान युग में बदलते हुए जीवन मूल्यों की कहानी है।" स्पष्ट कीजिए कि ये जीवन मूल्य कौन-से हैं और क्यों बदल रहे हैं। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी यशोधर बाबू तथा उनके परिवार की नई पीढ़ी के माध्यम से परंपरा और आधुनिक जीवन-दृष्टि का अंतर दिखाती है।
- संयुक्तता, सादगी और आत्मीयता के स्थान पर वैयक्तिक स्वतंत्रता, सुविधा, उपभोग और सार्वजनिक प्रदर्शन का बढ़ना इसके मुख्य संकेत हैं।

चरण 1: पुराने मूल्यों की पहचान कीजिए यशोधर बाबू के जीवन में सादगी, अनुशासन, आत्मीय संबंधों और पुरानी परंपराओं का महत्त्व है। किशनदा से मिला संस्कार उनके आचरण को प्रभावित करता है। वे दिखावे और अनावश्यक खर्च के प्रति सहज नहीं हैं। इसलिए विवाह की वर्षगाँठ को नए ढंग से मनाना उन्हें परिचित घरेलू आत्मीयता से अलग अनुभव होता है।

चरण 2: नई पीढ़ी के व्यवहार से परिवर्तन समझिए बच्चे सुविधापूर्ण जीवन, आधुनिक रहन-सहन और अपनी पसंद को महत्त्व देते हैं। भूषण की अच्छी आय तथा पिता को दिया गया ड्रेसिंग गाउन नई आर्थिक स्थिति और आधुनिक जीवन-शैली के संकेत हैं। पत्नी भी बच्चों के नए ढंग के साथ चलती है। यशोधर बाबू परिवार के बीच रहकर भी अपनी मान्यताओं को कम प्रासंगिक पाते हैं।

चरण 3: परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण कीजिए शहरी वातावरण, आर्थिक उन्नति, पाश्चात्य प्रभाव और पीढ़ियों के अलग अनुभव इन मूल्यों को बदलते हैं। नई पीढ़ी सफलता को सुविधाओं और जीवन-शैली में व्यक्त करती है। पुरानी पीढ़ी संबंधों की गरमाहट और सादगी को अधिक महत्त्व देती है। कहानी यह भी दिखाती है कि उपहार और आयोजन का प्रेम तभी सार्थक है जब सामने वाले की भावनाएँ समझी जाएँ।

चरण 4: लगभग 100 शब्दों का मॉडल उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' में सादगी, आत्मीयता, परंपरा और पारिवारिक सामंजस्य के स्थान पर आधुनिकता, उपभोग, प्रदर्शन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्त्व बढ़ता दिखता है। यशोधर बाबू किशनदा से मिले पुराने संस्कारों में

विश्वास रखते हैं, जबकि उनके बच्चे सुविधापूर्ण आधुनिक जीवन चाहते हैं। विवाह की वर्षगाँठ का पाश्चात्य ढंग से आयोजन और भूषण द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन इस अंतर को उभारते हैं। पत्नी भी बच्चों की जीवन-दृष्टि अपना रही है। शहरीकरण, बढ़ती आर्थिक समृद्धि, पाश्चात्य प्रभाव और पीढ़ियों के भिन्न अनुभव इन बदलावों के कारण हैं। इस परिवर्तन में यशोधर बाबू की भावनाएँ उपेक्षित होती हैं और वे अपने ही परिवार में अकेलापन अनुभव करते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कहानी बदलते समय में परंपरागत सादगी और आत्मीयता के साथ आधुनिक सुविधा, व्यक्तिवाद तथा प्रदर्शन के टकराव को सामने लाती है। आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन के बीच पीढ़ियों में संवेदनशील संवाद की आवश्यकता इसका प्रमुख संकेत है।

त्वरित सुझाव: हर मूल्य-परिवर्तन को कहानी के प्रसंग से जोड़िए और अंत में उसके सामाजिक कारण बताइए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

"यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे।" – 'जूझ' पाठ से उद्धृत इस कथन के संदर्भ में ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा की शिक्षा की आकांक्षा आर्थिक अभाव तथा खेती के कठिन जीवन से जुड़ी है। कथन को इसी प्रसंग में समझना चाहिए।
- ग्रामीण युवक की मन:स्थिति में पारिवारिक दायित्व, भविष्य की चिंता और शिक्षा से आत्मनिर्भर बनने की आशा एक साथ उपस्थित हैं।

चरण 1: कथन के प्रसंग और भाव को समझें आनंदा खेत में श्रम करते हुए पढ़ाई का अवसर पाना चाहता है। उसका अनुभव है कि केवल खेती में खपते रहने से परिवार की आर्थिक दशा नहीं सुधर रही है। इसलिए 'गड्ढे में धकेल रही है' में खेती से जुड़े अभाव और निराशा का भाव है। नौकरी की चाह श्रम से बचने की इच्छा नहीं, नियमित आय और बेहतर भविष्य की आकांक्षा है। पाठ में पढ़ाई के लिए उसका संघर्ष इस आकांक्षा की गंभीरता दिखाता है।

चरण 2: उत्तर की विषयवस्तु व्यवस्थित करें उत्तर में पहले खेती की कठिनाइयों से उत्पन्न असुरक्षा, फिर शिक्षा तथा नौकरी की आशा और अंत में परिवार एवं व्यक्तिगत आकांक्षा के बीच संघर्ष रखें। सभी ग्रामीण युवकों की स्थिति एक जैसी बताने के बजाय कथन में उभरती मानसिकता स्पष्ट करें। शिक्षा को तत्काल सफलता की गारंटी न कहें; आनंदा के लिए वह जीवन बदलने की संभावना है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'जूझ' का यह कथन ग्रामीण युवाओं की आर्थिक असुरक्षा और बेहतर जीवन की आकांक्षा व्यक्त करता है। खेती में कठिन परिश्रम के बावजूद अभाव बने रहने से उन्हें अपना भविष्य अनिश्चित लगता है। आनंदा को लगता है कि खेतों में ही खपते रहने से उसकी दशा नहीं बदलेगी। इसलिए वह पढ़ाई करके नौकरी पाना और नियमित आय अर्जित करना चाहता है। उसके भीतर पारिवारिक जिम्मेदारियों तथा व्यक्तिगत उन्नति की इच्छा का द्वंद्व है। शिक्षा उसे गरीबी से निकलने, आत्मनिर्भर बनने और सम्मानपूर्ण जीवन पाने का मार्ग दिखाई देती है। उसका संघर्ष निराशा के बीच आशा, संकल्प और आगे बढ़ने की बेचैनी दिखाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन ग्रामीण युवा की आर्थिक विवशता, शिक्षा में विश्वास तथा अपने श्रम को बेहतर भविष्य में बदलने की तीव्र इच्छा को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खेती से उपजी असुरक्षा, शिक्षा से आशा और पारिवारिक दायित्व का द्वंद्व जोड़ें; केवल नौकरी की इच्छा बताकर न रुकें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना विकसित नागरिक समझ और सामुदायिक जीवन की सुव्यवस्था का प्रमाण है।
- तुलना का आधार सड़कों का विन्यास, जल-निकासी, घरों की व्यवस्था और सार्वजनिक स्वच्छता है; केवल प्राचीनता का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पाठ से नगर-योजना की विशेषताएँ चुनें मुअनजो-दड़ो की सड़कें और गलियाँ योजनाबद्ध रूप से बनी थीं। घरों से निकलने वाले पानी के लिए व्यवस्थित नालियाँ थीं। स्नानघर, कुएँ और सार्वजनिक स्नानागार जल तथा स्वच्छता के प्रति नागरिक सजगता दिखाते हैं। घरों का निर्माण और बस्तियों का विन्यास बताते हैं कि नगर का विकास आकस्मिक फैलाव के रूप में नहीं हुआ था। ये ठोस विशेषताएँ तुलना का आधार बनती हैं।

चरण 2: वर्तमान से तुलना का आशय स्पष्ट करें लेखक प्राचीन व्यवस्था की प्रशंसा करके वर्तमान नगरों की कमियों की ओर ध्यान दिलाता है। आज भी अनियोजित निर्माण, गंदगी और जल-निकासी की कठिनाइयाँ दिखाई देती हैं। इसलिए आधुनिक होने का दावा भर किसी नगर को बेहतर नहीं बना देता। तुलना में हर आज के नगर को एक जैसा दोषपूर्ण न कहें; पाठ का आशय प्राचीन नगर की उन्नत नागरिक व्यवस्था के सामने वर्तमान की विडंबना दिखाना है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर लेखक मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना को अत्यंत सुव्यवस्थित मानता है। उसकी चौड़ी सड़कें, समकोण पर मिलती गलियाँ, योजनाबद्ध मकान और ढकी हुई नालियाँ विकसित नागरिक समझ का परिचय देती हैं। घरों के स्नानघर, कुएँ तथा सार्वजनिक स्नानागार बताते हैं कि पानी और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता था। इसके बरक्स आज के अनेक नगरों में अनियोजित निर्माण, गंदगी और जल-निकासी की समस्याएँ मिलती हैं। इस तुलना से लेखक स्पष्ट करता है कि हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता कई दृष्टियों से आधुनिक नगरों से आगे थी। उसकी व्यवस्था आज के नगर-नियोजन को भी स्वच्छता और सामुदायिक सुविधा की सीख देती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की तुलना प्राचीन नगर की वैज्ञानिक योजना और स्वच्छता-बोध की श्रेष्ठता दिखाते हुए आधुनिक नगरों की अव्यवस्था पर विचार करने को प्रेरित करती है।

त्वरित सुझाव: नगर-योजना के ठोस उदाहरण देकर वर्तमान की समस्या से उनकी तुलना करें; केवल सिंधु सभ्यता की सामान्य प्रशंसा न लिखें।